रिपोर्ताज की परिभाषाएँ

रिपोर्ताज आधुनिक युग में विकसित एक गौण गद्य-विधा है, जिसका उदय द्वितीय महायुद्ध के समय युद्ध की घटनाओं के रिपोर्ट या विवरण प्रस्तुति के अंतर्गत एक साहित्यिक विधा के रूप में हुआ था। इस प्रकार, यह विधा समाचार पत्रों की देन है और इसका जन्म पत्रकारिता की कोख से हुआ है। रिपोर्ताज फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। यह अंग्रेजी के रिपोर्ट (Report) का हिंदीकरण है। रिपोर्ताज का जन्म 1936 ई. में उस समय हुआ, जब अमेरिकी लेखक इलिया एहटेनबर्ग द्वारा अनेक रिपोर्ताज लिखे गये। द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका का साहित्यिक रूप में आँखों देखा वर्णन ने इसे एक साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। हिंदी में रिपोर्ताज विधा का श्रीगणेश 'रूपाभ' में प्रकाशित शिवदान सिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा में' (दिसम्बर, 1938) से होता है।

1. शिवदान सिंह चौहान के अनुसार— "रिपोर्ताज एक रिपोर्ट है लेकिन इसके साथ उसमें घटना अपने परिवेश की सम्पूर्ण चित्रात्मकता के साथ भावों और संवेदना के ज्वार-भाटे की तरंगों से एक सजीव अनुभव भी बन जाती है और पाठकों को सवाक् चित्रपट की भाँति किन्तु यथार्थ और विश्वस्त रूप से उनका अनुभव प्रदान करती है। आज के युग में रिपोर्ताज एक ऐसा रूप विधान है, जिसके द्वारा वर्तमान जीवन की संघर्षमयी वास्तविकता का अनुभव पाठकों तक पहुँचाया जा सकता है।

2. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में— ''रिपोर्ताज एक तरह से यात्रा-वृत्त का डिटेल है और अधिकतर तात्कालिक उत्तेजन के रूप में लिखा जाता है।"

3. हिंदी साहित्य कोश, भाग 01 में रिपोर्ताज के विषय में कहा गया ह कि— 'रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को रिपोर्ताज कहते हैं। वस्तुगत तथ्य को रेखाचित्र की शैली में प्रभावोत्पादक ढंग से अंकित करने में ही रिपोर्ताज की सफलता है।

उपर्यत परिभाषाओं के आधार पर मेरी दृष्टि में कहा जा सकता कि मानवता को झकझोरने वाली, रोंगटे खड़े करने वाली युद्ध, अकाल, महामारी, बाढ, सूखा, भूख इत्यादि की त्रासदी एवं विभीषिकापूर्ण घटनाओं एवं विवरणों की आँखों - देखी एवं कानों सुनी सजीव, साहित्यिक, कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति रिपोर्ताज है। चूँकि रिपोर्ताज मुख्यतः किसी रोमांचकारी, आतंककारी या विभीषक घटना - युद्ध, अकाल, बाढ़, सूखा आदि पर आधारित होते हैं इसलिए वे निरंतर नहीं लिखे जाते।

रिपोर्ट – रिपोर्ताज में अंतर

1. रिपोर्ट का संबंध पत्रकारिता – जगत् से है जबकि रिपोर्ताज एक साहित्यिक विधा है।

2. रिपोर्ट में तथ्यों का लेखा-जोखा मात्र होता है, उसमें कलात्मक अभिव्यक्ति एवं साहित्यिकता का अभाव होता है, जबकि रिपोतार्ज तथ्यों को साहित्यिक, कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत करता है।

3. रिपोर्ट में जहाँ घटनाओं का विवरण होता है, वहीं रिपोर्ताज में घटनाओं की प्रस्तुत में सरसता की चाशनी होती है, जिसके कारण शुष्क रपट सरस साहित्यिक रूप प्राप्त कर लेता है।

4. रिपोर्ट का लेखक समाचार-पत्रों का संवाददाता होता है जबकि रिपोर्ताज का लेखक एक साहित्यकार होता है।

रिपोर्ताज के गुण—

1. आँखों-देखी, कानों-सुनी घटनाएँ ही रिपोर्ताज का वर्ण्य-विषय होती हैं। रिपोर्ताज-लेखक के लिए घटना का प्रत्यक्षदर्शी होना आवश्यक है। तथ्यों का सजीव एवं यथार्थ वर्णन रिपोर्ताज का सर्वप्रधान गुण है।

2. घटना के यथार्थ वर्णन के साथ - साथ रिपोर्ताज को कथातत्त्व से युक्त होना चाहिए।

3. रिपोर्ताज का गुण उसकी साहित्यिकता, चित्रात्मकता अथवा कलात्मकता है।

4. रिपोर्ताज के लिए लेखक को पर्यवेक्षण - क्षमता में निष्णात होना चाहिए। रिपोर्ताज - लेखक को पत्रकार एवं साहित्यकार दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है। डॉ. लक्ष्मीनारायण चातक व डॉ. हरि महर्षि ने लिखा है कि— "रिपोर्ताज - लेखन के लिए एक ओर पत्रकार दूसरी ओर निबंधकार और तीसरी ओर कहानीकार की प्रतिभा अपेक्षित है। अनुभव की व्यापकता, जनजीवन से निकट सम्पर्क और सहज संवेदनशीलता रिपोर्ताज - लेखक से अपेक्षित गुण हैं।

5. घटनाओं के सफल नियोजन और प्रभावित संपुंजन में ही रिपोर्ताज की कला सन्निहित होती है । रिपोर्ताज लेखक को बड़ी सजगता के साथ घटनाओं के नियोजन, घटनाओं के मर्म और पात्रों की मनःस्थिति इत्यादि का अंकन करना चाहिए तभी रिपोर्ताज की सफलता संभव है।

6. रिपोर्ताज के लिए आवश्यक है - लेखक की सरल, सहज विषयानुकूल एवं प्रभावशाली भाषा-शैली।

कहा जा सकता है कि रिपोर्ताज के आवश्यक गुणों में घटना का सजीव एवं यथार्थ वर्णन, कथात्मकता, साहित्यिकता, चित्रात्मकता, कलात्मकता, विश्वसनीयता, घटनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव और सफल नियोजन तथा सरल, सहज एवं प्रभावपूर्ण भाषा - शैली इत्यादि उल्लेखनीय है।

रिपोर्ताज के प्रकार—

रिपोर्ताज के प्रमुख प्रकार निम्नांकित है -

1. घटना-प्रधान रिपोर्ताज - रोमांचक, विभीषक घटनाओं (यथा - युद्ध, अकाल, बाढ़, सूखा इत्यादि) पर लिखे गये रिपोर्ट घटना - प्रधान रिपोर्ताज कहलाते हैं। जैसे - रांगेय राघव का बंगाल के दुर्भिक्ष और महामारी पर 'तूफानों के बीच' शीर्षक से लिखित रिपोर्ताज घटना प्रधान एक प्रसिद्ध रिपोर्ताज है, इसमें आँखों-देखी घटनाओं, यथा भूख से बिलबिलाते नर-कांकालों एवं पूंजीपतियों व्यापारियों, मुनाफाखोरियों के अमानवीय मृत्यों इत्यादि का मार्मिक विवरण प्रस्तुत हुआ है। बंगाल का अकाल (प्रकाशचंद गुप्ता) ऋण-जल धन जल (फणीश्वर नाथ रेण) इत्यादि रिपोर्ताज हिंदी के श्रेष्ठ घटना-प्रधान रिपोर्ताज हैं।

2. सामाजिक रिपोर्ताज - सामाजिक रिपोर्ताज का ताना-बाना सामाजिक जीवन-संघर्ष, सामाजिक चेतना, सामाजिक यथार्थ, सामाजिक बोध, सामाजिक जीवन के दुःख-दर्द इत्यादि पर आधारित होता है। मुन्नी की पढ़ाई, भिखारी का आगमन (रांगेय राघव), इतिहास के पन्नों पर खून के धब्बे (भगवतशरण उपाध्याय), गरीब और अमीर (रामनारायण उपाध्याय), जुलूस रूका है (विवेकी राय) इत्यादि रचनाएँ हिंदी के प्रसिद्ध सामाजिक रिपोर्ताज हैं।

3. सांस्कृतिक रिपोर्ताज - सांस्कृतिक रिपोर्ताज का वर्ण्य-विषय मेले, उत्सव, समारोह, अभिनंदन इत्यादि पर आधारित होते हैं। जैसे- कन्हैयालाल मिश्र (स्वतंत्रता पूर्व कांग्रेस के अधिवेशन), माखनलाल चतुर्वेदी का अभिनंदन समारोह, 15 अगस्त 1951 को आयोजित स्वतंत्रता-समारोह इत्यादि हिंदी के प्रसिद्ध सांस्कृतिक रिपोर्ताज के हस्ताक्षर हैं।

4. व्यंग्यात्मक रिपोर्ताज - व्यंग्यात्मक रिपोर्ताज का फलक व्यंग्य पर आधारित होता है। जैसे- विवेकी राय का 'बाढ़! बाढ़! बाढ़' शीर्षक व्यंग्यात्मक रिपोर्ताज है।

5. संस्मरणात्मक रिपोर्ताज - जिन रिपोर्ताजों में किसी घटित घटना आदि का स्मर्यमाण की स्मृति के आधार पर शब्दांकन किया जाता है, उसे संस्मरणात्मक रिपोर्ताज कहते हैं। जैसे- कैलाश नारद (अगस्त क्रांति का जयंती वर्ष, धरती के लिए), निर्मल वर्मा, रामकुमार, सतीशकुमार इत्यादि लेखक रिपोर्ताज के उल्लेखनीय लेखक है।

6. डायरी-शैली के रिपोर्ताज - डायरी शैली के रिपोर्ताज में वास्तविक का क्रमबद्ध निरूपण, तिथि एवं स्थान का निरूपण प्रमुखता से किया जाता है। अमृतलाल नागर की प्रसिद्धि डायरी-शैली के रिपोर्ताज और गदर के फूल इत्यादि डायरी-शैली के रिपोर्ताज के प्रमुख उदाहरण है।

7. राष्ट्रीय रिपोर्ताज - राष्ट्रीय महत्त्व की व्याख्या करने वाले, राष्ट्र के गौरव एवं सम्मान को अक्षुण्ण रखने वाले रिपोर्ताज राष्ट्रीय रिपोर्ताज कहलाते है। धर्मयग, नया पथ इत्यादि राष्ट्रीय रिपोर्ताज के उदाहरण है।

8. अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ताज - विश्व-पटल पर घटित घटनाएँ अथवा ऐसी घटनाएं, जिनका प्रभाव विश्व के फलक पर दृष्टिगोचर होता है, अंतरराष्ट्रीय । रिपोर्ताज कहलाता है। फणीश्वरनाथ रेणु की नेपाली क्रांति-कथा (1978), धर्मवीर भारती की युद्धयात्रा, निर्मल वर्मा की आग एक स्वप्न इत्यादि रिपोर्ताज अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ताज के उदहारण है।